विषय : बचपन की यादों में ... 18

यादों की खोज पर ... 45/

पावन सलिल गंगा के तट पर एक हरे-भरे गाँव था। वो गाँव था काशी। पुराने वाले काशी में प्यार भर रहा था। पर अब वहाँ सिर्फ स्वार्थ है। सिर्फ अपनों की विचार है, दूसरों का नहीं। वहाँ एक नानी, उसके पोती और उसकी बेटा प्रेम महेश जी रहा था। वो लोग वहाँ 18 सालों से वहाँ था। उस नानी को वहाँ की हरेक चीजों का चलना, उनना सब कुछ पता था। नानी की पोती है आलिया। आलिया को नानी प्यार से अम्मु बुला रहा था। आलिया सातवीं कक्षा में, शहर के एक बड़े स्कूल में पढ़ता था।

एक दिन आलिया फोन में अपनी सहेलियों से इंद्रजाल से बातचीत कर रहा था। तब नानी पूजा के बाद उसकी तरफ आ रहा था। पर फोन में बहुत ही चाव से पड़ी आलिया उसे नहीं देखा। तब नानी उसके ओर मुड़कर कहा: "आज की के बच्चों को बचपन का कोई याद नहीं है। कैसे मिलेगा यादें रहा वक्त इस यंत्र में तो है?"। दादी के क्रोध इन बातों में था। तब अम्मु ने कहा: "ओह नानी, आप क्या कह रहे हैं? आपको पता है बाहर धूप है, धूप में खेलने से मेरा निकाल कम हो जाती है।" "ओह: तेरी निकाल! जाओ, जाके अपनी पापा से पूछ उसकी यादों के बारे में, तब तुम्हें समझ में आयेगा की असली निकाल क्या होती है"। नानी ने क्रोधित होकर कहा। "ठीक है, मैं पूछ लेता हूँ।" - अम्मु ने कहा।

आलिया के पापा एक गायक था। माँ एक अध्यापिका। वो आलिया के पापा - प्रेम महेश एक रोकस्टार था। ~~उसने सोचा~~ आलिया ने सोचा - "देख, लेता हूँ, पापा को ऐसा याद है या नहीं"। वो अपनी नयी गाना की तैयारी में था। "पापा, पापा आपके बचपन के बारे में बता दो न?" - अम्मु ने कहा। "ठीक है, बाबा!" - प्रेम ने कहा। उसने शुरू कर ~~दि~~ उसकी बचपन का कहानी। "मेरी बचपन में ये सब फो +

आदी नहीं था।" "तो मुझे पता है, आगे कहो न!"- आलिया कहा। "ठीक है, इसलिए मुझे अपना बचपन की बहुत कुछ यादें है। मेरी बचपन में यहाँ इतनी विकसित नहीं था। रामु चाचा के घर पर था यहाँ की पहला टी.वी। सिर्फ उसके घर पर ये एक गली था, मेरी बचपन में, इस गली में हम गरीबी से जीता था। मुझे गली में जाकर तुम्हारे उम्र में काम करना पडा वो भी कीचड निकालने की, इस हाथों से मैं वो कीचड निकाला था"।

"पापा, इस हाथों से" बहुत ही संदेह से अम्मु ने पूछा। "हाँ, मेरी बच्ची इस हाथों से" प्रेम ने जवाब दिया। अम्मु शर्मिंदा हो गया था। और कहा: "छी"। प्रेम ने कहा: "ऐसा, न कहो बेटा, मैं बाकी कह रहा हूँ, सुनो हरेक कामों को इज़्ज़त होता है, समझा?"। "हाँ, पापा, आप आगे कहो"- आलिया ने कहा। "और, कुछ दिनों मुझे भूख भी रहा पडा। पर मुझे पता था अच्छा दिन आनेवाला है। मैं तुम्हारी तरह इंद्रजाल से कहानी नहीं सुनता था। मैं तो अपनी नानी से कहानी सुनाता था। यहाँ के हरेक बच्चों मेरी दोस्तों था, हम गली में खेलता था, एक साथ नाचता था, और बारिश के वक्त पर हम सब एक होकर बाहर जाता था बिना छतरी से। तुम्हें पता है, कितना सुख है बारिश में खेलना"। प्रेम ने जवाब दिया।

"वाह! सुपर! अब मज़ा आ गया। आगे कहो न!"- अम्मु ने बहुत खुशी से कहा। प्रेम ने आगे कहा: "बारिश में ~~खेलकर~~ खेलते, देखकर माँ आयेगा और बहुत डाँटेगा। पर मुझे कोई असर नहीं पडता। तब माँ कहेगी घर में होकर खेलो, मैं कहेगा ठीक है। और हमारे घर पर सब आयेगा और हम आंगन में पेपर से नौका बनाकर खेलेगा। और बारिश के बाद हम मछली पकडने के लिये जायेगा। माँ का प्यार, दोस्तों के साथ खेल, पापा का डाँट ये सब बचपन की सविशेषताओं है। और अगले दिन सर्दी

हमे पुकारेगा, और माँ डाटेगा, वो तो है उसका काम। और इस शाम पर लुका चुप्पी, आदी खेलों खेलने के लिये मैदान जायेगा। माँ बहुत डाटेगा पर माँ की हाथ-पैर पकड़कर और खेलने की इजाज़त खरीदेगा। और उसके बाद उससे भी बडी खेल शोर से खेलगा। और रात में देर पर घर आयेगा बहुत क्लान्त होकर, और चाय पीयेगा कभी। कभी, घर में चाय नहीं होता। और माँ के साथ रामु चाचा के घर जायेगा टीवी देखने के लिये।"

आलिया की अंदाशा बढ रहा था। प्रेम फिर से कहने लगा, वो उसकी बचपन की दुनिया में खोया था। प्रेम कहने लगा: "एक दिन रात में बहुत बडा बारिश हुआ। ये बारिश पाँच-दिनों में था। और जलप्रलय। हुआ। हमारे गाँव में सिर्फ हमारे घर पर प्रलय नहीं आया। बाकी सबकी सामान खोया था"। आलिया ने जल्द से पूछा: "और आपका रामु चाचा का टीवी?" "वो भी" - प्रेम ने जवाब दी। और कहा: "हम भी उदास रहा, तुम्हारी तरह और जलप्रलय कुछ शांत होने वक्त हम जल में खेला था। माँ ने डाटा फिर भी। और यहाँ पेड-पौधे से सजा हुआ था, मेरी बचपन में। जब हमारी घर में खाने की सामान नहीं होती तब हम दूसरे के घर पर जाता था और खाना खा लेता था। हम पत्तों से ऐनक जैसा सामान बनाता था।"

"और बाजरा तैयार हुआ खेतों में जना था। और एक सीक्रेट बता दू, तुम्हें?, अम्मु।" प्रेम ने कहा। - "क्यों? नहीं?" - अम्मु ने जवाब दिया। "हम लोग बाजरा किसी न देखे वक्त पर लेगा। मतलब, हम यहाँ की बच्चों बाजरा का चोर था। और आम तैयार होने वक्त पर आम के पेड के नीचे से आम लेगा। ऐसा छोटी मोटी शरारतीयों से सजने रहा था मेरी बचपन। मैं कभी सोचती हूँ गली में काम करने के बावजूद मुझे इतना यादों मिलता है तो तुम जैसा

आज के बच्चों को यह याद क्यों नहीं मिलता?"। ने कहा। "क्योंकि नयी ज़माने की लोग स्वार्थी है पापा" अम्मु ने कहा। "अब तुम स्वार्थी नहीं हूँ। क्यों जब कोई समझेगा वो स्वार्थी है, निःसार है वो निस्वार्थ बन रहा है, बेटा। ये सब मेरी ~~बचपन~~ बचपन की यादों की सिर्फ एक टुकड़ा है। असली यादों मुझे नहीं मिला। इससे भी मज़ेदार यादों था मेरी बचपन में मेरे पास पर क्या करे? ईश्वर सबको याद करने का शक्ति नहीं देता।" प्रेम ने कहा।

"पापा, आप मुझे अब निस्वार्थी बनाया, आप मेरी सबसे अच्छा पापा है।"-अम्मु ने कहा। "ओ। भाईचारी जैसा गुण मेरी बचपन से मुझे मिला। अच्छा इंसान दान करने से बनता है। यह मुझे मेरी बचपन ने सिखाया। और स्कूल के शिक्षकों का मार से इस गलती ने मुझे बचाया। यादों की खोज पर है आज से मैं। शब्दों से बता नहीं सकेगा इस बचपन की यादों को। कुछ तो जादू है इसपर। शब्दों से न बतानेवाला, दिल को पुकारनेवाला है यह बचपन। इसलिए मैं चाहती हूँ बेटा कृपया तू भी यादों को ढूंढो।"-प्रेम ने कहा।

"हाँ! अब मैं समझा नानी क्यों मुझे बचपन की महत्व पर प्रभाषण दिया, लगभग 3 वाक्यों से। अब का बच्चा बड़ा है पर दिल तो ज़रूर छोटा है।"- आलिया ने कहा। "ये, हुई न बात।"- प्रेम ने कहा। "पापा, आपके नयी गाना का विषय बचपन बना देना दो न?" आलिया ने कहा। "अरे वा! यह तो बहुत ही सुंदर सोच है। ठीक है। प्रेम ने कहा। "अब से इसका तैयारी कर देना हूँ है। आलिया जाके नानी को गले में लगा और पहली बार वो बाहर आया बिना चप्पल से ज़मीन को पुकारने के लिये और बचपन की यादों की खोज पर। आलिया उसके घर के पहाड़ के ऊपर जाकर कहा:"

बचपन बचपन सबसे सुंदर काल। रखो, करो अपनी बचपन की यादों का खोज पर। करो अपनी फोन बंद और करो अपनी यादों का खोजना। वो सिर्फ उस पहाड में जो था। उसकेलिए नहीं था पर दुनिया की सारी लोगों को था।

आतिया, उसकी पापा, नानी और सब अब करती हैं यादों का खोज। और आगे बढ़ते हैं यादों से मिला गुण-धर्म के साथ, यंत्र के साथ नहीं। और वापस आकर वो नानी से कहा: "नानी पैसा से कुछ खरीद सकता, और जा सकता पर यादों ऐसा नहीं है। आज की पीढ़ी जब ये समझेगा तब अच्छा होगा।

आगे बढ़ते हैं सब-गाँव के लोग अब बचपन की यादों के साथ।

संदेश: "पैसा से, या और कुछ से बचपन की यादों खरीद न सकता। इसे तो ढूँढ ना पड़ता है। ढूँढते-ढूँढते हम कहते हैं - बचपन ही सबसे सुंदर काल।"